IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882
INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

नगरीकरणः परिभाषा एवं नगरीय जीवन का उदय–

रामेन्द्र कुमार (शोध छात्र)
नेहरु ग्राम भारती मानित
वि0 वि0 प्रयागराज

शोध सारांश–

दुनिया में पहले नगरों के विकास से सम्बंधित विभिन्न प्रस्थापनाएं जो प्रस्तावित की गई हैं, उनसे यह प्रतिबिम्बित होता है कि कैसे अलग–अलग तरीके से समझते हैं। इस प्रकार जहॉ चाइल्ड ने जीवन–निर्वाह पध्दति खाद्य अधिशे"ा उत्पादन, ताम्र–कांस्य तकनीक, यातायात में चक्के वाले वाहनों का प्रयोग, बड़े जहाज, हल का प्रयोग , इत्यादि को महत्व दिया।वहीं राबर्ट मक एडम्स ने सामाजिक कारको पर और गिडियन स्खोबर्ग में नगरों के उद्भव के लिए राजनैतिक कारकों को अधिक तरजीह दी। वस्तुतः''नगर और गांव दो परस्पर विपरीत ध्रुवन होक वैसो स्वतंत्र और अन्तसम्बंधित इकाइयां हैं जो अपने व्यापक सांस्कृतिक पर्यावरण के अभिन्न घटक हैं।

नगरीकरणः परिभाषा एवं नगरीय जीवन का उदय–

'नगरीकरण' का अर्थ है नगरों का उद्भव।'सभ्यता' का अभिप्राय इससे कहीं व्यापक है किन्तु यह एक ऐसे विशिष्ट सांस्कृतिक अवस्था की द्योतक है जो सामान्य रूप से नगरों और लिपियों से सम्बंधित माना जा सकता है। हालांकि, पुरातत्वविदों ने आकार और स्थापत्य के विकास के आधार पर कुछ नवपाषाण युगीन बस्तियों को लिपि की अनुपस्थिति में भी नगरीय दर्जा दिया है।जार्डन के जेटिको(8वीं सहस्राि"द सा0 सं0 पू0) और टर्की के सताल ह्युक(7वींसहस्राब्दि सा0 सं0 पू0) इसके उदाहरण है। मेसोअमेरिका कि माया सभ्यता और ग्रीस की माइसिनियन सभ्यताओं में वास्तविक नगर मौजूद नहीं थे, जबकि पेरू की इंका सभ्यता के पास वास्तविक लेखन प्रणाली मौजूद नहीं थी। फिर भी उपरोक्त अपवादों के बावजूद नगर और लेखन एक–दूसरे से जुड़े हुए हैं एवं नगरीकरण और सभ्यता दोनों का पर्याप्त के रूप में प्रयोग होता रहा है।

नगरों को परिभाषित करने का सबसे पहला प्रयास वी0 गार्डन चाइल्ड द्वारा किया गया।वो0 गार्डन चाइल्ड ने ''नगर को सामाजिक विकास के क्रम में एक नई आर्थिक अवस्था के रूप मं परिभाषित करते हुए इसे एक क्रान्ति की संज्ञा दी है। पहले की 'नवपाषाण क्रान्ति' की तरह नगरोयक्रान्ति भी न तो आकास्मिक और ना ही हिंसक थी, बल्कि यह सदियों से चली आ रही सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तनों की परिणति थी।''[1]चाइल्ड ने वैसे दस अमूर्त विशेषताओं को कल्पना की जिनके आधार पर पुरातात्विक विधि से प्रारम्भिक नगरों तथाउनसे प्राचीन अथवा समकालीन गांवों के बीच अन्तर किया जा सके।

चाइल्ड के विचारों ने नगरीय समाज की मूलभूत विशेषताओं को रेखांकित करने के लिए आने वाले दिनों में एक रोचक बहस की शुरुआत कर दी। नगरीकरण के लिए प्रयुक्त क्रान्ति शब्द की कुछ विद्वानों ने आलोचना की। कुछ विद्वान यहां 'क्रान्ति' शब्द क उपयोग से सहमत नहीं थे क्योंकि इससे नगरीकरण अचानक और सचेत परिवर्तन का बोध होता है इसके बाद के दिनों में नगरीकरण को परिभाषित करने के सम्बन्ध में तीन अलग–अलग धाराएं प्रचलित हुई। पहली धारा लिपि और लेखन, भव्य स्थापत्य या सघन जनसंख्या जैसे गुणों की पहचान करने पर केन्द्रित होती है। दूसरे के अन्तर्गत बस्ती का आकार, स्थापत्य और मापतौल की समरुप पैमाना जैसी ठोस विशे"ाताओं पर अधिक बल देती है जबकि तीसरी श्रेणी की परिभा"ाएं अपेक्षाकृत अधिक अमूर्त विशि"टताओं पर केन्द्रित हैं, जैसे – सांस्कृतिक, जटिल, प्रभावशाली, राजनैतिक नियंत्रण, समरसता इत्यादि।

दुनिया में पहले नगरों के विकास से सम्बंधित विभिन्न प्रस्थापनाएं जो प्रस्तावित की गई हैं, उनसे यह प्रतिबिम्बित होता है कि कैसे अलग–अलग तरीके से समझते हैं। इस प्रकार जहॉ चाइल्ड ने जीवन–निर्वाह पध्दति खाद्य अधिशे"ा उत्पादन, ताम्र–कांस्य तकनीक, यातायात में चक्के वाले वाहनों का प्रयोग, बड़े जहाज, हल का प्रयोग , इत्यादि को महत्व दिया।वहीं राबर्ट मक एडम्स ने सामाजिक कारको पर और गिडियन स्खाबर्ग में नगरों के उद्भव के लिए राजनैतिक कारकों को अधिक तरजीह दी।

मकएडम्सने नगरों और उनके अंतः क्षेत्रों के बीच एक महत्वपूर्ण सम्बंध को नगरीय जीवन की समझ के लिए व्याख्यायित किया। वस्तुतः''नगर और गांव दो परस्पर विपरीत धुवन होक वैसो स्वतंत्र और अन्तसम्बंधित इकाइयां हैं जो अपने व्यापक सांस्कृतिक पर्यावरण के अभिन्न घटक हैं। नगरों का विकास गांवो से होने वाले कृषि अधिशेष उत्पादन पर ही निर्भर करता है और दूसरी ओर कृ"ि अधिशेष उत्पादन स्वतः प्रेरित आर्थिक प्रक्रिया न होकर विभिन्न प्रकार के सामाजिक एवं राजनीतिक कारकों से नियंत्रित होती है। मकएडम्स ने अपने नगरों द्वारा निभाए जाने वाली विभिन्न भूमिकाओं पर भी प्रकाश डाला है। नगर एक प्रकार से कृषि अधिशेष के अधिग्रहण और पुनवितरण के संपर्क बिंदु हुआ करते थे। व उन नवीन सामाजिक और राजनीतिक संस्थाओं के लिए स्थाई आधार का काम भी करते थे, जो विभिन्न लघु आर्थिक गतिविधियां में लगे विशेषज्ञों के बीच सम्बंधों को नियंत्रित करता था। नगर अधिशे"ों के भंडारण और संपत्ति के संकेंद्रण को सुरक्षित केन्द्र होता था। यह अभिजात वर्ग द्वारा सार्वजनिक निर्माण कार्यक्रम पर किए जाने वाले खर्च का भी मुख्य स्थल होता था। ये अध्ययन, कलात्मक गतिविधि, दार्शनिक बहस और धार्मिक विचारों के उद्भव का भी केन्द्र होता था।''[2]

स्खावर्ग (1964) ने नगरों के इतिहास तथा विभिन्न साम्राज्यों के उत्थान एवं पतन के बीच गहरे सम्बंध को रेखांकित करने का प्रयास किया। उनका तर्क था कि ''विभिन्न साम्राज्योंके सामाजिक संगठनों का संचालन तथा व्यापार और व्यवसाय के लिए आवश्यक स्थायित्व, वस्तुतः प्रभावशाली राजनतिक नियंत्रण के द्वारा ही सम्भव है। नगरों के द्वारा संपादित कार्य और विशेषताओं की व्याख्या करते हुए उन्होंने स्पष्ट किया कि नगरों में सघन आबादी अपेक्षाकृत काफी छोटे से क्षेत्र में निवास कर सकती है जो सुरक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। नगरों में विभिन्न विधाओं के विशेषज्ञों के बीच सम्पर्क और संवाद की समुचित व्यवस्था होती ह नगरों के केंद्रों में कुलीन वर्ग निवास करता है और इसलिए राजनीतिक निर्णय और सन्य योजनाएं वहीं बनती हैं। बौद्धिक तथा व्यवसायिक गतिविधियों के अतिरिक्त नगरों का कुलीन वर्ग कलात्मक अभिव्यक्ति को भी संरक्षण देता है और इसलिए वे संस्कृति और कला केन्द्र के रुप में भी कार्य करने लगे।''[3]

नगरीकरण के विकास के सम्बन्ध में जनसंख्या वृद्धि, लम्बी दूरी का व्यापार, सिचाई तथा वर्ग – संघ"ा जैसे कारकों को भी महत्वपूर्ण माना गया। वास्तविकता के उन्नयन मे विभिन्न प्रकार के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, तकनीकी और वैचारिक कारकों के बीच अन्तःक्रिया देखी जा सकती है। इस प्रकार की अन्तःक्रिया विभिन्न संस्कृतियों में भिन्न–भिन्न परिप्रेक्ष्य में विकसित होती है। जब विश्व के प्रारम्भिक स्त्रोत के रुप में उपयोग में लाया जाता है। तब अन्य कारकों की अपेक्षा हमारे पास नगरीकरण के तकनीकी पक्ष के वि"ाय में हो प्रत्यक्ष जानकारी उपलब्ध हो सकती है।

दर असल, नगरों का उद्भव ग्रामीण तथा नगरीय दोनों प्रकार के मानवीय आवास व्यवस्था के लम्बे इतिहास का एक हिस्सा है। नगरीकरण की कहानी बढ़ती हुई शिल्प की विशि"टताएं, सामाजिक श्रेणीकरण तथा राजनीतिक संरचना के विकास से जुडो है जिसको हम राज्य की संज्ञा दे सकते ह।

छठीं शताब्दी सा0 सं0 पू0 का उत्तर भारत गांवों से भरा हुआ था और उन्हो गांवों और उन गांवों से सटे हुए जंगलों के बीच में स्पष्ट रूप से नगरीय संरचनाएं और स्थापत्य दिखलाई पड़ने लगे और नगरीय बस्तियों का विकास होने लगा। चक्रवर्ती (2006 : 315) ने नगरीकरण की इस प्रक्रिया की शुरुआत को 800 सा0 सं0 पू0 से शुरू बतलाया है। दक्षिण भारत का जहां तक प्रश्न है वहां कोडुमनल नामक स्थल महत्वपूर्ण है। यहां पर तमिल–ब्राह्मीलिपि में उत्कीर्ण भित्तो–आरेख (ग्राफिटी) मृदभाण्डों के चित्र मिल हैं जो महत्वपूर्ण हैं। क0 राजन का मानना है कि तमिलनाडु में प्रारंभिक ऐतिहासिक काल की शुरुआत 400 सा0 सं0 पू0 से ही हो गई थी। चक्रवर्ती (2006 : 345) के अनुसार ''कोडुमनल से प्राप्त प्रमाणों के आधार पर तमिलनाडु में नगरीकरण की प्रक्रिया की शुरुआत को 500 सा0 सं0 पू0 से माना जा सकता है।''[4]

नगरों के अलग–अलग परिचय थे। वे राजनीतिक नियंत्रण के केंद्र के रूप में शिल्प उत्पादन के लिए अथवा व्यापार के लिए और कभी–कभी इन तीनों के लिए उपयोग में लाए जाते थे। सामान्य संवत की प्रारंभिक शताब्दियों म ही उत्तरी भारत में नगरीकरण की प्रक्रिया प्रारंभ हो गई। इस दृष्टि से इसे उत्तर भारत के लिए द्वितीय नगरीकरण का काल भी कहते हैं। इस प्रक्रिया का आधार मजबूत कृ"ा व्यवस्था और सुनिश्चित खाद्यान्न अधिशेष का उत्पादन था। इन बस्तियों में जनसंख्या का आकार

काफी बढ़ गया।शिल्प, विशिष्टोकरण, व्यापार और मुदा प्रणाली क प्रारंभिक उपयोग के कारण एक प्रकार की जटिल सामाजिक परिस्थिति का प्रादुर्भाव हुआ। राजनीतिक नियंत्रण ने इस प्रक्रिया में भरपूर सहयोग दिया होगा।

पालि स्त्रोतों में विभिन्न प्रकार की नगरीय बस्तियों की सूचना मिलती है।''पुर का तात्पर्य नगर से था जिसके चारों ओर सुरक्षा प्राचीर बने होते थे। नगर का तात्पर्य दुर्ग से था। निगम, बाजार वाले शहर को कहते थे जो गांव और नगर के बीच की चट्टी को कह सकते हैं। अपने आकार और सामाजिक जटिलता के कारण इन्हें वाणिज्य गतिविधियों से जोड़ा जाता है। राजधानी के अतिरिक्त छोटे नगर भी होते थे, जिनको नगरक कहा गया है। महानगर बड़े शहर को कहते थे, चंपा, श्रावस्ती, राजगृह, साकेत, कौशाम्बी, और वाराणसी महानगरों की श्रेणी में आते थे।''[5] इस काल के साहित्य में नगरों की दीवारें, बड़े–बड़े द्वारा और नगर के चहल–पहल को बहुत ही उल्लेख की गई है।

प्रारंभिक ऐतिहासिक नगरों के विषय में हमारे पास जो पुरातत्विक सूचनाएं उपलब्ध है वह आद्य ऐतिहासिक हड़प्पा कालीन नगरों की तुलना में काफी कम है। कश्मीर, पंजाब, सिंध, और उत्तर–पूर्वी राज्यों में इस दिशा में उत्खनन कार्य काफी निम्न स्तर कर रहा है। तक्षशिला और भिट जैसे कुछ प्रमुख केंद्रों को छोड़ दें तो इस क्षेत्र में बड़े स्तर पर पुरातात्विक उत्खनन हुए ही नहीं है। बहुत सारे प्रारंभिक, ऐतिहासिक नगरीय केंद्र पहले की शताब्दियों से लगातार बसे हुए थे। कुछ केंद्रों में आज तक निरंतर सभ्यता बनी रही है इसलिएइनके प्रारंभिक स्तरों का अध्ययन काफी कठिन है। इन केंद्रों पर जो सीमित उत्खनन कार्य किए भी गए हैं वे अपर्याप्त और अधूरे हैं। इनसे सम्बंधित रेडियो कार्बन तिथियां भी काफी कम मात्रा में उपलब्ध हैं। अधिकांश पुरातात्विक प्रतिवेदनों में प्रारंभिक मध्य तथा अंतिम चरण के NBPW स्तरों में भेद नहीं किया गया है य सामान्य रूप से ल0 700–100 सा0 सं0 पू0 के बीच का प्रारूप प्रस्तुत करते हैं और विशेष रुप से प्रारंभिक NBPWस्तर की सूचनाएं काफी कम मात्रा में उपलब्ध कराते हैं फिर भी इन नवीन नगरी संरचनाओं के विषय में साहित्यिक और पुरातात्विक स्रोतों के आधार पर काफी स्पष्ट चित्र सामने आता है।

उत्तर पश्चिम के दो बड़े नगर चरसद्दा और तक्षशिला हिंद् कुश पर्वतमाला के पार जाने वाले व्यापारिक मार्गों के केंद्रों में पढ़ते थे। खबर दर के अतिरिक्त बहुत सारे अन्य मार्ग भी थे जिनमें से एक काबुल नदी घाटी के साथ–साथ जाता था। एक दूसरे महत्वपूर्ण मार्ग के द्वारा तक्षशिला से कश्मीर जड़ता था और यही मार्ग आगे मध्य एशिया की ओर जाता था पांचवी शताब्दी सा0 सं0 पू0 मेउत्तर–पश्चिमो क्षेत्र अखामनी शासकों के नियंत्रण में था और बाद में यह क्षेत्र सिकंदर के प्रभाव में आया चरसद्दा ही प्राचीन पुष्कलावती नगर था ऐसी मान्यता है कि इस नगर की सभ्यता राम के भाई भरत के पुत्र पुष्कर के द्वारा की गई थी यूनानी वृत्तांतों में इस नगर को पियूषलावटिस और प्रोकलेस कहां गया है। एरियन के कथनानुसार इस नगर में सिकंदर के विरुद्ध विद्रोह किया था और इसलिए बाद में यहां पर मेसिडोनियाई सेना का एक कैंप लगा दिया गया था। हफेस्टियन ने इस विद्रोह को दबाया था। चरसद्दा के बालाहिसार स्थित पुरातात्विक टीले के उत्खनन के दौरान 600 सा0 सं0 पू0 के काल के अवशेष मिले हैं चौथी शताब्दी सा0 सं0 पू0 तक इस नगर के चारों ओर मिट्टी के सुरक्षा प्राचीर और गड्ढे बने हुए थे ।

प्राचीन तक्षशिला एक अत्यंत प्रमुख नगर था जो अफगानिस्तान और मध्य एशिया को जाने वाले स्थल मार्गों पर पड़ता था और यह नगर सिंधु नदी के द्वारा अरब सागर में स्थित सामुद्रिक मागो से भी जुड़ा हुआ था महाकाव्यों के अनुसार, इसी स्थान पर जन्मेजय ने प्रसिद्ध नाग यज्ञ करवाया था बौद्ध जैन और यूनानी स्त्रोतों में इस नगर की काफी चर्चा हुई है इस स्थान पर किए गए पुरातात्विक उत्खननों के दौरान तीन प्रमुख बस्तियों को रेखांकित किया गया है जो भीर, सिरकप और सिरसुख के नाम से जाने जाते हैं भीर का टीला इस नगर की प्राचीनतम बस्ती है जहां छठी–पांचवी शताब्दी सा0 सं0 पू0 से लेकर दूसरी शताब्दी सा0 सं0 पू0 तक के अवशेष मिले हैं इस स्थल के प्रारंभिक स्तर कालखंड–IVसे चमकीले लाल मृदभाण्ड प्राप्त हुए हैं जो इस क्षेत्र में और भी प्राचीन काल के प्रयोग में चले आ रहे थे इसके अतिरिक्त धूसर और काले मृदभाण्डों का एक नया प्रकार भी प्राप्त हुआ है जिसमें विशिष्ट आकार के कम गहराई वाले और अधिक गहराई वाले पात्र पाए गए हैं इनकोNBPWया उत्तरी कृ”ण मार्जित मृदभाण्डों की स्थानीय नकल माना जाता है यहां से चांदी के बने हुए आहत सिक्के

और अन्य कई प्रकार के सिक्के भी मिले हैं किंतु भीर के टीले से प्राप्त सूचनाएं तीसरी शताब्दी सा0 सं0 पू0 के बाद की विस्तृत सूचना उपलब्ध कराती हैं ।

उत्तरी कृष्ण मार्जित मृदभाण्ड संस्कृति की प्राप्ति नैनीताल जिले के काशीपुर नामक स्थल से हुई है यह उत्तराखंड का कुमाऊं क्षेत्र है लेकिन यहां के उत्खनन सम्बंधी विस्तृत जानकारी नहीं उपलब्ध है सिंधु–गंगा विभाजन क्षेत्र में रोपड़ का कालखण्ड–III जो शिवालिक हिमालय के तराई भाग में पड़ता है यहां से लगभग 600–200सा0 सं0 पू0 के बोच उत्तर कृ"ण मार्जित मृदभाण्ड संस्कृति के अवशेष मिल हैं इसी से मिलते जुलते मृदभाण्ड हरियाणा के हिसार जिले के अमरोहा तथा कुरुक्षेत्र के निकट कर्ण का किला से भी प्राप्त हुए हैं।

दिल्ली के पुराने किले में किए गए उत्खनन के दौरान, जिसे स्थानीय मान्यता के अनुसार, इन्द्रप्रस्थ का क्षेत्र माना जाता है, उत्तरी कृष्ण मार्जित मृदभाण्ड संस्कृति की प्राप्ति चौथी–तीसरी शताब्दी सा0 सं0 पू0 क बीच मिली है इसमें लोग मिट्टी के ईंटों के मकान और भट्ठी में पकाए गए ईंटों के मकान में रहा करते थे मिट्टी के लेप वाले एक घर से बहुत सारे चूहों को प्राप्ति हुई है इन घरों में जल निकासी की व्यवस्था के लिए नालियां बनी थी यहां से टेराकोटा के छल्लेदारकुएं भी मिले हैं जिनका व्यास 75 सेंटीमीटर के लगभग देखा गया है और ऐसा माना जाता है कि उन्हें सोख्ता की तरह इस्तेमाल भी किया जाता था यहां से टेराकोटा की बनी पशुओं और मानव की मूर्तियां, रिंगस्टोन की एक प्रतिमा का एक टुकड़ा, टेराकोटा का बना एक घुड़सवार, एक मिट्टी की मोहर, छोटी अंगूठियां और अगेट का एक डिस्क (चक्र) भी मिला है NBPW में उतरी कृष्ण मार्जित मृदभाण्डों में से एक पात्र के भीतरी सतह पर हाथी अंकित देखा जा सकता है। टेराकोटा के और भी दो सील (मोहर) मिले हैं जिस पर स्वातिरखित और सेइनकार नामक दो व्यक्तियों का नाम उत्कीर्ण हैं।

प्रारंभिक ऐतिहासिक काल के प्रमुख नगरों में मथुरा का स्थान आता है। महाभारत और पुराणों में इस स्थान को यादव वंशो से जोड़ा गया है जिनमें वृ"णी भी एक कुल था जिसमें कृष्ण का जन्म हुआ था।''यह नगर गंगा के उर्वर मैदानों के द्वार पर स्थित है और उत्तरा पद का एक प्रमुख केंद्र है क्योंकि यहां से उत्तरापथ दक्षिणवर्ती दिशा में मालवा की ओर जाता था और एक मार्ग पश्चिमो तट की ओर मथुरा नगर के उत्तर में यमुना के निकट अंबरोश टोला को मथुरा के सांस्कृतिक स्तर

विन्यास में कालखण्ड –Iसे जोड़ा गया है। इस स्थान पर चित्रित धूसर मृदभाण्ड संस्कृ ति के दौरान ग्रामीण बस्तियों क उदय के प्रमाण मिले हैं मथुरा से दक्षिण पश्चिम की ओर 25 किमी0 को दूरी पर सोंख स्थित है।''[6]

काम्पील्य दक्षिण पांचालों की राजधानी थी और फर्रुखाबाद जिला उत्तर प्रदेश के काम्पिल्य नामक स्थान को इस प्राचीन नगर से जोड़ा जाता है। यहां पर किए गए सीमित उत्खननो के आधार पर चित्रित धूसर मृदभाण्डसंस्कृति के काल से लेकर कालांतर तक की संस्कृतियों के लगातार अवशेष मिले हैं बरेली जिले से अहिच्छत्र से भी उत्तरी कृष्ण मार्जित मृदभाण्ड स्तर से अवशेष मिले हैं लेकिन यहां से प्राप्त सभी व्यवस्थित जानकारी हमारे पास दूसरी शताब्दी सा0 स0 पू0 के बाद से उपलब्ध है।

रामायण में राम के समय में कोशल की राजधानी के रूप में वर्णित अयोध्या के अवशेष का विस्तार क्षेत्र चार पांच किमी0 आंका गया है प्रारंभिक उत्खननों के दौरान यहां से प्रारम्भिक उत्तरी कृष्ण माजित मृदभाण्ड संस्कृति के अवशेष मिले हैं विभिन्न प्रकार के उत्तरी कृष्ण मार्जित मृदभाण्डों के अतिरिक्त यहां से धूसर मृदभाण्ड भी मिले हैं जिन पर काले रंग के रखीय डिजाइन पाए जाते हैं यहां के घर मिट्टी के गिलावे पर बने थे। पकी हुई ईटों की कोई संरचना नहीं मिली है लोहे और तांबे की कई सामग्रियां मिली हैं। हाल में किए गए 2002–2003 के दौरान उत्खननां से NBPW स्तर के बहुत सारे उपादान मिले हैं।टेराकोटा की बनी संरचनाओं में अनुष्ठानिक कुंड बटखरे, डिस्क ,डिस्क पर बने पहिए और एक टूटे हुए पशु की प्रतिमा मिली है इसके अतिरिक्त लोहे की बनी एक टूटी छ्री, शीशे के मनके और हड्डी के नोकदार शिल्पकृति भी मिले हैं। यहां पर बटन के आकार के हल्के नीले रंग के शीशे के दो टुकड़े मिले हैं जो शायद पहले किसी अंगूठी में संजोए गए थे। इन पर 'शिधे' शब्द उत्कीर्ण है जो तीसरी शताब्दी के ब्राम्हो लिपि में लिखा गया था।

वत्स की राजधानी कौशाम्बी थी और यह दक्कन, गंगा नदी घाटी और उत्तर–पश्चिम को जोड़ने वाले व्यापारिक मार्ग का एक प्रमुख केंद्र था यह वर्तमान के कोसम नामक गांव से जोड़ा जाता है ऐसा कहा जाता है कि 1025 सा0 सं0 प्0 के काल से ही काफी मजबूत सुरक्षा प्राचीरां का निर्माण हो चुका था लेकिन अन्य स्रोतों के आधार पर इसका काल लगभग 600 सा0 सं0 प्0से पहले नहीं आंका जा सकता। पाली ग्रंथों में वणित प्रसिद्ध घोषिताराम बिहार कौशाम्बी में ही स्थित था परवती काल

से घोषिताराम उत्कीर्ण, जुड़े मोहरों की बहुत सारे संघ से प्राप्ति इस नगर को उस विहार से जोड़ती है।

इलाहाबाद जिले के श्रृंगवेरपुर क उत्खनन से यहां उत्तरी कृष्ण मर्जित मृदभाण्ड स्तर का काल लगभग 700 सा0 सं0 प्0आंका गया है यहां पर किए गए उत्खनन एक तालाब और उससे जुड़ी संरचनाओं के इर्द–गिर्द केंद्रित थे। जो प्रारंभिक ऐतिहासिक काल में बना था। इसके पहले के पुरातात्विक स्तरों के विषय में बहुत जानकारी उपलब्ध नहीं है रामायण में श्रंगवरपुर ही वह स्थान है जहां ऋ"यश्रृंग ऋषि का आश्रम था और राम ने गंगा नदी को पार कर यहीं से अपना वानप्रस्थ जीवन प्रारंभ किया था।

बनारस के उत्तर पूर्व में स्थित राजघाट को प्राचीन वाराणसी नगर के रूप में चिन्हित किया गया है। यह नगर अपने उत्कृष्ट वस्त्र उद्योग के कारण जाना जाता था यह उत्तरी भारत के व्यापारिक मार्गों का एक प्रमुख केंद्र था। यहां से 5–6 स्तरों कसांस्कृतिक विन्यासउपलब्ध है।

उत्तर प्रदेश के गोंडा और बहराइच जिलों के सीमा पर स्थित सहेत और महेत नामक स्थान को कोशल की राजधानी श्रावस्ती के रूप में चिन्हित किया गया है। यह भी उत्तरा पथ पर स्थित एक प्रमुख केंद्र था। महेत का इलाका मुख्य नगर से तथा सहत का इलाका जतवन नामक प्राचीन बौद्ध विहार के रूप में रेखांकित किया गया है। बौद्ध परम्परा के अनुसार, जेतवन नामक महाविहार का क्षेत्र अनाथपिंडक के द्वारा संघ को दान में दिया गया था। नगर के चारों और बनी सुरक्षा प्राचीर तीसरी शताब्दी सा0 सं0 प्0की है।

उत्तरी ''उत्तर प्रदेश के बस्ती जिला में दो पुरातात्विक स्थान गवरिया और पीपरहवा स्थित है। इन केंद्रों का उत्खनन कार्य के0एम0 श्रीवास्तव के नेतृत्व में भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण के द्वारा किया गया और इस सर्वेक्षण के माध्यम से लंबे समय से चली आ रही प्राचीन कपिलवस्तु से जुड़े विवादों को सुलझाया जा सकता है।''[7] कपिलवस्तु महाविहार अंकित कई मुहर पीपरहवा से प्राप्त हुए हैं। विहारां,चैत्यों क अतिरिक्त बु) के अवशेषों पर निर्मित 'ाक्यों द्वारा प्रसिद्ध स्तूप भी खोजे जा चुके हैं। गवारिया ही वस्तुतः कपिलवस्तु नगर था।

बिहार के मुजफ्फरपुर जिला में स्थित बसाढ़ को प्राचीन वैशाली के रूप में चिन्हित किया गया है। यह लिच्छवियों और वज्जि संघ की राजधानी थी। वैशाली मगध से नेपाल के तराई जाने वाले मार्ग पर स्थित था। बौद्ध स्रोतों में इस नगर के विषय में बहुत कुछकहां गया है। जैन परंपरा के अनुसार, यह महावीर का जन्म स्थान था और पुराणों मं इसे वोसल नामक शासक का नगर बतलाया है राजा वोसल का गढ़ कहे जाने वाले पुरातात्विक टीले से पुराने दुर्ग के अवशेष मिले हैं खारन पोखर नाम के एक तालाब को लिच्छविया के राज्याभिषेक से जुड़े प्रसिद्ध तालाब के रूप में माना जा सकता है यहां से प्राप्त अवशेषों में बहुत से पांचवी–चौथी शताब्दी सा0 सं0 पू0 के हैं। मिट्टी के बने एक स्तूप को बाद में ईटों से बनाया गया था। यह उक्त तालाब के उत्तर– पश्चिम में अवस्थित है। ऐसा सम्भव है कि इस स्तूप के भीतरी मिट्टी वाला हिस्सा वास्तव में लिच्छवियों के द्वारा बु) के अवशेषों पर बनाया गया होगा।

पटना के दक्षिण–पूर्व में 40 मील दूर राजगीर अवस्थित है। प्राचीन राजगृह मगध की पहली राजधानी थी। यह स्थान पठन से मध्य गंगा नदी घाटी तक जाने वाले महत्वपूर्ण व्यापारिक मार्ग पर स्थित था।इस नगर को भी बुद्ध और महावीर दोनों से जोड़ा गया है। यहां पर व पुरातात्विक सर्वेक्षणों में बौद्ध ग्रंथों तथा व्हेनसांग के वत्तांतो में वर्णित स्थलों को खोजने की दृष्टि से किए गए हैं। यहां पर दो नगरों को रेखांकित किया गया है– प्राचीन राजगृह तथा नवीन राजग्रह। प्राचीन राजगृह पांच पहाड़ियों के बीच स्थित था, जिसके चारों ओर दोहरे पत्थर के सुरक्षा प्राचीर बने हुए थे नवीन राजगृह भी पत्थर के दीवारों से घिरा हुआ था जो प्राचीन राजगृह के उत्तर में स्थित था। प्राचीन राजगृह के चारों ओर बना सुरक्षा प्राचीर 25–30 मोल तक फैला हुआ था पाठ्यात्मक स्रोतों के अनुसार, यह सुरक्षा प्राचीर बिम्बिसार केकाल में (छठी शताब्दी सा0 सं0 पू0) बनाया गया था। नवीन राजगृह का निर्माण शायद आजाद शत्रु (पांचवी शताब्दी सा0 सं0 पू0) के काल में हुआ था जिसके चारों ओर दोहरे प्रस्तरीय प्राचीर बने हुए हैं।

विनयपिटक में कहा गया है कि बुद्ध ने पाटलिपुत्र के विषय में यह भविष्यवाणी की थी कि यह एक महान नगर के रूप में उभर कर आएगा, किंतु इसे सदैव आग, पानी और आंतरिक कलह का खतरा बना रहेगा। कुम्रहार और बुलंदीबाग (पटना) नगर मे हयी उत्तरी कृ"ण मार्जित मृदभाण्ड स्तर के सर्वेक्षणों से प्रारम्भिक ऐतिहासिक काल

की संरचनाओं के अस्तित्व का पता चलता है। किंतु इस स्थान के सबसे पहले के पुरातात्विक स्थल को नहीं खोजा जा सका है। प्राचीन चंपा, अंग की राजधानी थी जो चंपानगर और चंपापुर गांवों से चिन्हित की जाती है। य गांव दक्षिण बिहार के भागलपुर शहर से 5 किलोमीटर पश्चिम में स्थित है। यहां से प्राप्त NBPW स्तर के अवशेषों में सुरक्षा प्राचीर के अवशेष और उनके चारों तरफ किए गए गड्ढे प्रमुख है।

चंद्रकेतुगढ़ और तामलुक जैसे कई महत्वपूर्ण पुरातात्विक स्थल निचली गंगा नदी घाटी में अवस्थित है किंतु इस क्षेत्र के प्रारम्भिक सभ्यता स्तर के विषय में बहुत कुछ नहीं खोजा जा सका है। बरिबट्टेश्वर में उत्तरी कृष्ण माजित मृदभाण्ड संस्कृति स्तर का असंशोधित तिथि निर्धारण के अनुसार 500 सा0 सं0 पू0 का माना गया है। महास्थानगढ़ की प्राचीनता भी इसी काल से जोड़ी जाती है इस प्रकारबंगाल में NBPWस्तर महाजनपद काल से ही रेखांकित किया गया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. चाइल्ड, वी. गार्डन, 1995 'द अर्बन रिवोल्यूशन' इन ग्रेगोरी एल0 पोसेल (संस्करण), 1979, एन्सिएन्ट सीटीज आफ द इण्डज, नई दिल्ली, विकास पब्लिशिंग हाउस – पृ0 सं0–12–17

2. मक एडम्स, राबर्ट, 1966, द इवोल्यूशन आफ अर्बन सोसाइटी' वाइडेन फील्ड एण्ड निकोलसन, लन्दन–– पृ0 सं0–18

3. स्खोबर्ग, गाइडन, 1964, 'द राइज फाल आफ सीटीज : ए थियोटिकल पर्सपेक्टिव' इन नेल्स एण्डरसन(संस्करण), अर्बनिज्म एण्ड अर्बनाइजेशन, लाइडेनः इ.जे. ब्रिल पृ0 सं0–15

4. चक्रवर्ती दिलीप के 1984, ' ओरीजन आफ द इण्दज सिविलाइजेशन, थियोरीज एण्ड प्राब्लम्स' इन बी0 बी0 लाल एण्ड एस0पी0 गुप्ता (इडिशन) फान्टायर्स आफ द इण्दज सिविलाइजेशन, नई दिल्ली – बुक्स एण्ड बुक्स – पृ0 सं0–33

5. बाग्ले, विमाला, 1996, द एन्सिएन्ट पोर्ट आफ अरिकामेड् न्यू इक्वावेशन एण्ड रिसर्च सज 1989–1992, वाल्यूम –1 (मेमोरीज आर्कियोलोजिक्स–22) पाण्डिचेरी – पृ0 –44

6. हार्टेल – 1993– पृ0 88

7. श्रीवास्तव, के0एम0, 1996, इक्वावेशन एट पिपरहवा एण्ड गनवरिया, मेमोरीज आफ द आर्कियेालाजिकल सर्वे आफ इण्डिया, नयी दिल्ली– पृ0 94